JETIR.ORG | ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रघुवीर सहाय कृत 'कुछ पते कुछ चिट्ठियों' के शिल्प विधान का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ.सियाराम मीणा
आचार्य हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय कोटा

सारांश

रघुवीर सहाय नयी कविता ही नहीं आधुनिक हिन्दी कविता के महत्वपूर्ण एवं सशक्त कवि थे। भाषा, विचार, संवेदना, वस्तु, शिल्प और शैली के स्तर पर रघुवीर सहाय की कविता में निरंतर गंभीरता दिखाई देती है। रघुवीर सहाय के व्यक्तित्व में तटस्थता का भाव नहीं था वे निरन्तर बदलाव चाहते थे। कभी कथा लेखन, कभी काव्य लेखन तो कभी साहित्यिक निबंध व पत्रकारिता आदि अनेक विधाओं में बारबार घूमते रहते थे। उन्होंने अपने काव्य की विषय–वस्तु आम आदमी या कहे कि 'मार तमाम लोग' के जीवन से ग्रहण की थी। वास्तव में रघुवीर सहाय ने अपने आस–पास के दृश्यालेख के वर्णन और सामाजिक–राजनीतिक घटना प्रसंग के अनछूए पहलू को उजागर करने वाली व्यंग्योक्ति के माध्यम से वस्तुपरकता और अंतरंगता के बीच गहरा रिश्ता कायम किया है। कविता, कहानी, पत्रकारिता और चिन्तन सभी क्षेत्रों में उनका विकास लगभग अचूक है। संभवतः उनके व्यक्तित्व में भी यही विलक्षणता रची बसी हुई थी। **'कुछ पते कुछ चिट्ठियों'** रघुवीर सहाय का अंतिम प्रकाशित काव्य संगह है जिसमें लोग भूल गये हैं के बाद की अधिकांश कविताएँ संकलित है। 'आज की कविता', 'हत्या की संस्कृति' और वृद्ध का वक्तव्य संग्रह की प्रसिद्ध कविताएँ है। इसके अलावा अन्य छोटी कविताएँ जैसे– 'कस्बे में दिन ढले', 'परिवार', 'पागल औरत', 'बेसुरे लोग' संगह की मार्मिक कविताएँ हैं। 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' काव्य संग्रह शिल्प विधान की दृष्टि से समृद्ध काव्य है। अप्रस्तुत, प्रतीक, बिंब, भाषा शैली, व्यंग्यात्मकता, गद्यात्मकता, उपदेशात्मकता और सहज लाक्षणिकता को बढ़ाने हेतु मुहावरों का प्रयोग, सहज और स्वाभाविक है। उनकी भाषा कथ्य के अनुरूप है। काव्य भाषा बोलचाल की भाषा होकर भी विशिष्ट काव्यात्मकता से भरपूर है।

कुंजी शब्द : नयी कविता, संवेदना, वस्तु, शिल्प, भाषा, अप्रस्तुत विधान, बिंब, प्रतीक।

भूमिका :

दूसरा सप्तक के कवि रघुवीर सहाय स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर है। वे अपनी रचनाओं के आधार पर अपनी अलग ही पहचान रखते है क्योंकि वे कवि के साथ–साथ सम्पादक भी थे। इसीलिए उन्होंने समाज में घटने वाली घटनाओं और परिवर्तन को नजदीक से देखा और समझा था। वे एक विद्वान लेखक, चिन्तक, भावुक कवि, कथाकार, निबंधकार, अनुवादक और उच्च कोटि के सम्पादक भी थे। रघुवीर सहाय आम जनता से जुड़े हुए कवि थे वे हर भारतीय के दुख को अपना दुख मानते हुए उससे व्यथित होते है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य साधना में लगाया उनकी जीवन यात्रा से रूबरू होना हमारे लिए गौरव की बात है।

रघुवीर सहाय का व्यक्त्वि यथार्थवादी, कल्पनाशील, भावुक, रागात्मक और गुरू गम्भीर स्वभाव से युक्त था। वे

तथ्य की गहराई तक पहुँचना चाहतेथे तथा जड़ की थाह लेना उनका स्वभाव था। सहाय जी नये विचारों के आधुनिक कवि थे अतः उनके चिन्तन में नवीनता व आधुनिकता का समावेश था। ''रघुवीर सहाय का एक रूप

आधुनिक मिजाज के प्रतिनिधि का है दूसरा आधुनिकता के समीक्षक का। उनके रचना जगत को इन दोनों रूपों में देखना और इन रूपों के बीच एक अंधेरा सा छोड़ देना आसान भी है, उचित भी। आसान इस कारण है कि आधुनिक मिजाज और उसकी अभिव्यक्ति के पर्याय समझे जाने वाले लक्षण रघुवीर सहाय के जीवन–वृत्त में उतनी ही सुविधा से पहचाने जा सकते है जितनी सुविधा से हम इन पर्यायों की कठोर नैतिक जांच रघुवीर सहाय के लेखन–कविता और गद्य दोनों में ढूंढ सकते है। उचित इसलिए है क्योंकि निरे तार्किक विश्लेषण और उसके आधार पर फैसला ले लेने या सुना देने की प्रवृत्ति से सचेत होकर बचने की चिन्ता रघुवीर सहाय की रचनाओं में गहरे बैठी दिखाई देती है। विश्वास के साथ दुविधा और भय रघुवीर सहाय का प्रतिनिधि स्वभाव है।''[1]

रघुवीर सहाय राजनैतिक विचारों में गांधी जी और राममनोहर लोहिया के साम्यवादी विचारों से बेहत प्रभावित थे। मार्क्सवाद ने भी रघुवीर सहाय को प्रभावित किया परन्तु वे मार्क्सवादियों के साथ उठना–बैठना पसन्द नहीं करते थे। गरीब जनमानस को देखकर द्रवित हो जाना उनका स्वभाव था। वे गरीब लोगों में अपने आपको तलाश करते थे। सहाय जी को बचपन में ही अपनी माताजी को खो देने के कारण अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा अतः वे एकान्त प्रिय हो गये । सहाय जी व्यर्थ बोलने में विश्वास नहीं करते थे बल्कि कर्म को ही वे प्रधान रूप में स्वीकार करते थे। परिवार की जिम्मेदारियों ने सहाय जी को समय से पहले ही युवा बना दिया इस कारण मनोहर श्याम जोशी ने उनको ''पैदायशी बुर्जग''[2] कहा है। रघुवीर सहाय के व्यक्तित्व में तटस्थता का भाव नहीं था वे निरन्तर बदलाव चाहते थे। कभी कथा लेखन, कभी काव्य लेखन तो कभी साहित्यिक निबंध व पत्रकारिता आदि अनेक विधाओं में बारबार घूमते रहते थे। उन्होंने अपने काव्य की विषय–वस्तु आम आदमी या कहे कि 'मार तमाम लोग' के जीवन से ग्रहण की थी। वास्तव में रघुवीर सहाय ने अपने आस–पास के दृश्यालेख के वर्णन और सामाजिक–राजनीतिक घटना प्रसंग के अनछूए पहलू को उजागर करने वाली व्यंग्योक्ति के माध्यम से वस्तुपरकता और अंतरंगता के बीच गहरा रिश्ता कायम किया है। कविता, कहानी, पत्रकारिता और चिन्तन सभी क्षेत्रों में उनका विकास लगभग अचूक है। संभवतः उनके व्यक्तित्व में भी यही विलक्षणता रची बसी हुई थी। कि न तो वे गरजते तरजते थे और न घुटने टेकते थे। वे तो एक निर्लिप्तता, पर असंगतियों की विडम्बना को पकड़ने वाली सीधी सादी मार्मिक टिप्पणी करते थे।

'कुछ पते कुछ चिट्ठियों' रघुवीर सहाय का अंतिम प्रकाशित काव्य संगह है जिसमें लोग भूल गये हैं के बाद की अधिकांश कविताएँ संकलित है। 'आज की कविता', 'हत्या की संस्कृति' और वृद्ध का वक्तव्य संग्रह की प्रसिद्ध कविताएँ है। इसके अलावा अन्य छोटी कविताएँ जैसे– 'कस्बे में दिन ढले', 'परिवार', 'पागल औरत', 'बेसुरे लोग' संगह की मार्मिक कविताएँ हैं। 'समाधि लेख' कविता में आज की प्रकाशन व्यवस्था पर गहरा विद्रूप है। कवि ने परम्परागत शिल्प को तोड़ने का प्रयास किया है। काव्य संग्रह के शिल्प पर विचार करना अभिप्रेत है।

अप्रस्तुत विधानः

'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' काव्य संग्रह आजादी के बाद टूटते हुये सपनों की चिन्ता व्यक्त करता है। 'उनहार' शीर्षक कविता में अप्रस्तुत का स्वरूप इस प्रकार व्यक्त होता है–

''क्या ये स्मृतियाँ हैं विचारों की जो
अपने साथ कोई आदमी लिए हुए
हलकी–सी कोशिश करती हैं पहचान की
यह किताब कुछ अनुभव ऐसे बताती है
दस बरस पहले हुए थे जो।''3

कवि विचारों की स्मृतियों द्वारा नवीन युग को पहचानने की हल्की सी कोशिश करता है। कवि मानवता की संस्कृति की पहचान करने का प्रयत्न करता है जो उसके पूर्व संचित अनुभवों की पूँजी है। 'विदाई' शीर्षक कविता में बदलते युग में ढलती उम्र को पतन की कीमत बताते हुए प्रकट किया है–

''युग बदलता है उमर ढलती है
औरते मर्दो को जगत के अनुसार जीवन
बदलने का परामर्श देती हैं
पुरूष भी थक चुके होते हैं एक चोट खाते ही ध्वस्त होने के पूर्व
सोचने लगते हैं कि क्या पतन ही जीवन जीने की कीमत है।''4

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि का मन्तव्य है कि युग का बदलाव पीढ़ी का बदलाव है और इसी कारण औरतें पुरूषों को समय के अनुरूप ढलने का सुझाव देती है। पुरूष भी अन्याय और अत्याचार को सहते सहते थक चुके हैं हालांकि उनका थकना परिस्थिति के सामने झुकना है। वे समझ चुके हैं कि पतन ही जीवन की कीमत के रूप में अदा करना है। आज का मनुष्य सत्य से परिचित होने पर भी उसको छिपाना चाहता है यह अन्याय की संस्कृति का समाज है–

''हर एक हत्या में, पक्ष किसका लेंगे
तय किया करते हैं उस समय
जबकि हत्यारे को पहचान लेते हैं।''5

रघुवीर सहाय ने कविता में यह बताने का प्रयत्न किया है कि जुर्म करने वाले शासन सता की शह पाकर निरन्तर नीच कर्म करते जाते हैं और उनका बचाव करने के लिए जुर्म के ठेकेदार मानवता की हत्या करने से भी नहीं कतराते हैं।

प्रतीक :

रघुवीर सहाय की काव्य भाषा में प्रतीकात्मकता का गुण विशेष रूप से पाया जाता है। जैसे–

''क्योंकि आज ताकतवर
धरती चिनोड़ कर दौलत बढ़ाएँगे
और उसे हर समय बाँटेंगे कि हर समय
उनको गरीबी की जगह मिलती रहे
ऐसे मानवीयता बची रहे पृथ्वी पर''6

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में 'ताकतवर' शब्द भ्रष्ट और अत्याचारी नेताओं का प्रतीक है। ये धरती को निचोड़कर अर्थात् प्रकृति का दोहन करके अनर्गल रूप से अपने कालेधन को बढ़ाते हैं। मानवीयता शब्द यहाँ गरीबी का प्रतीक है जो कहता है कि मानो आज मानव मूल्यों की परिभाषा केवल गरीबी में ही बची है। 'रिजरफ़रेल' शीर्षक कविता में कवि ने स्टेशनों पर होने वाली भीड़ की विकटता का वर्णन करते हुए हाफ्ते, लपकते और बीमार फेफडे वाले लोगों के प्रतीक द्वारा हारी थकी और बेबस जनता का वर्णन किया है–

''थूक ही थूक है रात के दस बजे
भीड़ अब नहीं है। वे सब कहाँ गये,
बीमार फेफड़े, हाफते लपकते हुए''7

'पागल औरत' शीर्षक कविता में कवि ने पागल औरत को उस नारी जाति का प्रतीक बनाकर पेश किया है जो समाज के अत्याचारी और हत्यारे पुरूषों की अमानवीय मार को सहन करते–करते अपनी सुध–बुध खो चुकी है–

''तेज रफ़्तार से भागती मोटरें

और उनके बीच में एक पागल एक बड़ी चिड़िया सी
चदरा खोलें हुए नंगी स्त्री''7

इस प्रकार 'दयावती का कुनबा' शीर्षक कविता में कवि ने दयावती को उस सामाजिक बुराई का प्रतीक बनाकर पेश किया है जो हर बेटी के पिता की होती है। बेटी को बोझ मानने वाला यह समाज उसका विवाह की सम्पन्नता को किस प्रकार एक बोझ उतरने के रूप में देखता है? इसी को कवि ने इस रूप में बताया है–

''दयावती घर से विदा हुई
हर पुत्री का अपना भाग्य है
मानकर पिता ने वर ले दिया;
बोझ मिटा बाप का।''9

इसी प्रकार के अनेक प्रतीक प्रस्तुत काव्य संग्रह में भरे पड़े हैं। कवि ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करके अपनक काव्य की समाहार शक्ति को बढ़ाने का प्रयास किया है।

बिम्ब :

शाब्दिक चित्र भाषा में आकर्षण पैदा कर उसकी ऐन्द्रियता, कल्पनात्मकता और अर्थ की समृद्धि करते हैं। कुछ पत्ते कुछ चिट्ठियाँ काव्य संग्रह का बिम्ब विधान दर्शनीय है। 'मरघट' शीर्षक कविता में चाक्षुष बिम्ब प्रयोग कुए ऐसा है–

''दाह संस्कार में बड़ी कार्रवाई थी
यह लाओ, वह लाओ, यहाँ धरो, वहाँ धरो
सात मन लकड़ी, पुरानी, सूखी भारी
डब्बा भर एक वही दारा सिंह वाला घी
तीन हवन सामग्री के पाकिट, बस खत्म''10

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि जैसे यह सारा दृश्य आँखों के सामने ही उपस्थित हो गया है। रघुवीर सहाय द्वारा प्रयुक्त शब्दों में दृश्य को चित्रित करने की अद्‌भूत क्षमता है।

''ग्रामोफोन पर सितार
द्रूतलय में बजती गत
साढ़े तैतीस चक्र प्रति मिनट।''11

ग्रामोफोन पर सितार का तेजी से बजना ध्वनि बिम्ब का उदाहरण है। कवि संगीत की लयात्मकता के बिगड़े हुए स्वरूप को प्रदर्शित करना चाहता है। 'बार–बार' शीर्षक कविता में कवि ने सामाजिक व्यवस्था का बोझढोने वाले उस व्यक्ति के प्रति संवेदना प्रकट की है जो इसको सहन करने में असमर्थ है और इस भार से टूट जाता है कविता संवेद्य बिम्ब का स्वरूप प्रकट करती है–

''बार–बार ठीक उसी वक्त वह
व्यक्ति मर जाता है
जब जिसकी पीठ पर वक्त एक
गठरी रख जाता है।''12

'यथार्थ' शीर्षक कविता में घ्राण बिम्ब का प्रयोग निम्न है–

''मुड़ने पर द्वार दीख जायेगा
तब वह अजीब गंध आती है सीले बरोठे की
फिर इस तस्वीर की चौखट के पार्श्व से टिकी हुई

आधी सी छाया।''13

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने सीलन की अजीब सी गंध को प्रकट करने के लिए उसे बरोठे से उपमित किया है।

अन्त में कहा जा सकता है कि बिम्ब–विधान के विविध रूपों की दृष्टि से 'कुछ पते कुछ कुछ चिट्ठियाँ' काव्य संग्रह पर्याप्त समृद्ध है।

भाषा शैली :

'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' काव्य संग्रह की भाषा में रघुवीर सहाय ने व्यंग्यात्मकता, गद्यात्मकता, उपदेशात्मकता और सहज लाक्षणिकता को बढ़ाने हेतु मुहावरों आदि का भरपूर प्रयोग किया है। कवि की मान्यता है कि रचना की सार्थकता तब ही है जब वह वह पाठक या श्रोता के मन में पतन का विकल्प जाग्रत कर सके। 'हत्या की संस्कृति' कविता में कवि ने नष्ट होते मानवीय मूल्यों पर व्यंग्य किया है–

''अंग्रेजी पढ़ा लिखा हत्यारा कहता है
मुझे कही छिपना है, पुलिस पीछे पड़ी है
आधुनिक प्रेमिका कहती है खून, अरे लाओ, पट्टी कर दूँ
औरत से कहता है अभिजात अपराधी धन्यवाद।''14

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि ने सभ्य समाज के व्यक्ति द्वारा किये जाने जघन्य अपराध द्वारा मानवीय मूल्यों की होती हत्या पर व्यंग्य किया है। साथ ही आधुनिक प्रेमिका द्वारा पर दुःखकातरता की रक्षा के भाव को प्रकट किया है। गद्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया जाना भाषा की विलक्षणता को प्रकट करता है जो आधुनिक काव्यधारा की नई शैली है–

''जब कोई सरकार नागरिकों को षान्ति और समृद्धि का आश्वासन
देने के लिए राजाज्ञा का आश्रय लेती है, चौकन्ना होने का समय
आ जाता है कि इसका प्रतिलोम तो नहीं होने वाला है?''15

पंक्तियों के पढ़कर ऐसा लगता है कि जैसे हम किसी गद्यात्मक लेख का पठन कर रहे हो। गद्यात्मक शैली भाषा को भाव सौंदर्य को समृद्ध बनाती है।

'हकीम और औरत' शीर्षक कविता में कवि ने रेखा चित्रात्मक भाषा शैली का प्रयोग कर भाषा की बिम्बात्मक क्षमता का रूप प्रदर्शित किया है–

''उसके पतले अधर, बड़ी–बड़ी आँखें
पलकें महीन, दाँत भिंचे हुए हैं
जो खुले तो चेहरे का चरित्र कौंध जाय
उगलियाँ रोज के कामकाज से घिरीः
हरी हरी चुड़ियाँ।''16

काव्य पंक्तियों हमें महादेवी वर्मा के संस्मरणों में प्रयुक्त भाषा शैली की याद दिलाती है। कविता को पढ़कर लगता है कि कवि ने बिम्बात्मक भाषा शैली के माध्यम से औरत को जैसे सम्मुख ही प्रदर्शित कर दिया है। भाषा में चमत्कार प्रकट कर भाषा के आकर्षण को बढ़ाने हेतु मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में मुहावरों के आकर्षण की छटा अनेक रूपों में दिखाई पड़ती है।

''अनजाने व्यक्ति ने जान पर खेल कर
लोगों के सामने चेहरा दिखला दिया।''17

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि ने 'जान पर खेलना' और 'चेहरा दिखलाना' मुहावरे का प्रयोग कर भाषा के आकर्षण को बढ़ा दिया।

निषकर्ष :

अंत में कहा जा सकता है कि 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' काव्य संग्रह शिल्प विधान की दृष्टि से समृद्ध काव्य है। अप्रस्तुत, प्रतीक, बिंब, भाषा शैली, व्यंग्यात्मकता, गद्यात्मकता, उपदेशात्मकता और सहज लाक्षणिकता को बढ़ाने हेतु मुहावरों का प्रयोग, सहज और स्वाभाविक है। उनकी भाषा कथ्य के अनुरूप है। काव्य भाषा बोलचाल की भाषा होकर भी विशिष्ट काव्यात्मकता से भरपूर है। उनकी भाषा और शिल्प पर पत्रकारिता का प्रभाव होने के कारण आम आदमी के करीब जान पड़ती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रघुवीर सहाय संचयिता (परिचय) सं. कृष्ण कुमार पृ.सं. – 9
2. रघुवीर सहाय रचनाओं के बहाने एक स्मरण मनोहर श्याम जोशी पृ.सं. 9
3. कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ : रघुवीर सहाय, पृ. सं. 11
4. वही, पृ. सं. 26
5. वही, पृ. सं. 45
6. कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ : रघुवीर सहाय, पृ. सं. 22
7. वही, पृ. सं. 25
8. वही, पृ. सं. 41
9. वही, पृ. सं. 63
10. कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ : रघुवीर सहाय, पृ. सं. 28–29
11. वही, पृ. सं. 50
12. वही, पृ. सं. 72
13. वही, पृ. सं. 86
14. कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ : रघुवीर सहाय, पृ. सं. 17
15. वही, पृ. सं. 19
16. वही, पृ. सं. 40
17. कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ : रघुवीर सहाय, पृ. सं. 82

———————